अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कालेज

26.08.20

केशवदास की काव्यकला

प्रश्न: आचार्य केशवदास की काव्य-कला पर विचार कीजिए।

उत्तर: आचार्य केशव दास काव्य-कला के मर्मज्ञ व्यक्ति थे। उन्होंने अपनी काव्य कला के बल पर न केवल आचार्य की पदवी प्राप्त की वरन् हिन्दी साहित्य को अलंकारिक काव्य से सुशोभित किया। रीतिकाल में अलंकार को स्थापित करने में केशव दास का भारी योगदान है। केशवदास हिन्दी के सर्वप्रथम आचार्य हैं जिन्होंने काव्यशास्त्र पर अपनी लेखनी उठाई। उन्होंने काव्य रीति के प्रति सजग होकर उसके विभिन्न अंग और उपांगों का गंभीर विवेचन किया। केशव चमत्कार को मानने वाले अलंकारिक सिद्धांत पर आस्था रखते थे। अतः सिद्धांत रूप में उनका यह दोहा प्रस्तुत है —

"जदपि सुजाति सुलक्षणी, सुवरन सरस सुवृत।
भूषण बिनु न विराजई, कविता वनिता मित।।"

इसमें कोई संदेह नहीं कि केशव ने 'कविप्रिया' में अलंकार और अलंकार्य में अभेद ~~[illegible]~~ स्थापित करने वाली ध्वनि को विचारधारा की अभिव्यक्ति दी। शृंगार को रसराज मानने वाली 'रसिकप्रिया' पर उत्तर ध्वनि काल की सिद्धांत परंपरा का गहरा प्रभाव है। उन्होंने संस्कृत काव्य शास्त्र की पूर्व ध्वनि तथा उत्तर ध्वनि दोनों परंपराओं का प्रतिनिधित्व किया।

केशवदास की दृष्टि से उनकी रसिकप्रिया ग्रंथ ऐसा महत्वपूर्ण ग्रंथ है जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि विभिन्न रसों पर केशवदास जी का संपूर्ण अधिकार है। उन्होंने अपने को किसी विशेष रस से न ही बाँधा, बल्कि अपनी रचनाओं में सभी रसों का समावेश किया फिर भी, अपेक्षाकृत उन्होंने शृंगार रस को अधिक सजीवता एवं स्वाभाविकता प्रदान किया। शृंगार रस के रस राजत्व को दिखलाते हुए उन्होंने अन्य रसों का शृंगार के अंतर्गत सुंदर रूप में अंतर्भाव किया।

P.T.O

संयोग श्रृंगार में केशव ने सौंदर्य वर्णन, रूप वर्णन, हाव-भाव वर्णन, आभूषण वर्णन, जलाशय क्रीड़ा वर्णन तथा वन-उपवन का बड़ा सुंदर वर्णन किया है। ऐसा लगता है तत्कालीन प्रवृत्तियों का इन पर गहरा प्रभाव पड़ा था। इसी कारण श्रृंगार वर्णन में कहीं-कहीं इनका वर्णन अश्लीलता की हद तक पहुँच गया है। रीतिकालीन अन्य कवियों की तरह इन्होंने भी प्रेम की एकनिष्ठता पर जोर न देकर विलास और रसिकता पर अधिक जोर दिया है। विप्रलंभ श्रृंगार के अंतर्गत इन्होंने पूर्वराग, मान, करुणा, प्रवास, विरह, बारहमासा आदि के चित्रण में भरपूर योग दिया है। श्रृंगार के बाद इन्होंने वीरता को अपने काव्य में स्थान दिया है शौर्य और वीरता के वर्णन में इन्हें विशेष सफलता मिली है।

हिन्दी साहित्य में जब प्रकृति का विशद एवं स्वतंत्र चित्रण का प्रश्न उठता है तब आचार्य केशव का नाम सर्वप्रथम आता है। इन्होंने प्रकृति-चित्रण में प्रायः सभी शैलियों का प्रयोग किया है। अपने ग्रंथ 'रामचंद्रिका' में इन्होंने 'महाभारत' और 'रामायण' दोनों प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया। इन्होंने प्रकृति के अनेक मोहक चित्र खींचे। कहीं आलंबन, उद्दीपन, उपमान तो कहीं बिम्ब, प्रतीक, दूती, अलंकार आदि के चित्र दिखाये। इन्होंने मानवीकरण, रहस्य तथा मानव भावनाओं के आरोप आदि शैलियों में प्रकृति का चित्रण किया। किंतु कवि की अलंकृति दृष्टि ने इन्हें प्रकृति के वैभव को सहज रूप में देखने को नहीं दिया श्लेष और उपमा के आग्रह ने इन्हें प्रकृति के भयप्रद रूप का वर्णन करने में लगा दिया। किंतु जहाँ तक प्रकृति से रागात्मक संबंध का सवाल है वहाँ प्रकृति अपने सहज रूप में दिखाई पड़ती है। जैसे 'रसिकप्रिया' में घने बादलों का बड़ी मार्मिक व्यंजना मिलती है—

"राति चले कौं यत हैं
दिसी मेघ मह मदि आयो।"

कुछ आलोचकों ने संवाद की दृष्टि से केशव की भूरी-भूरी प्रशंसा की है। पं० कृपाशंकर ने लिखा है—

"केशव के संवाद नाटकीय अभिनय के बहुत उपयुक्त जान पड़ते हैं। इसलिए जहाँ रामलीला होती है वहाँ यद्यपि तुलसी के रामायण का आश्रय लिया जाता है परंतु संवाद केशव के लिए जाते हैं। रामलीला में केशव के संवादों का उपयोग पूर्वी नगरों में उतना नहीं होता क्योंकि रामचंद्रिका का प्रचार उधर नहीं है। किंतु, झाँसी के आस-पास एक बड़े प्रांत में तथा उत्तर की ओर रुहेलखंड तथा बैसवाड़ तक राम-लीलाओं में रामचंद्रिका के संवाद काम में लाये जाते हैं। इस संबंध में रावण और अंगद के संवाद को देखा जा सकता है —

"देवी मंदोदरी कुंभकर्ण आदि दै।
मित्त मंत्री जिते पूछि देखौ सबै।"

छंद-योजना में भी केशव की कोई सानी नहीं है। 'रामचंद्रिका' के आरंभ में ही केशव ने स्वीकार किया है कि — "रामचंद्र की चंद्रिका वर्णत हों बहु छंद।" अपने पूर्ववर्ती महाकाव्यों को देखकर केशव ने अपने ग्रंथ में ऐसे कई छंदों का प्रयोग किया है जो किसी और पूर्ववर्ती कवि ने नहीं किया है। केशव ने मात्रिक छंदों में सवैया, दोहा, चौपाई, सोरठा आदि का प्रयोग बखूबी किया है। इसके अलावा कुंडलिया, वसंत तिलका, हीरक, गीतिका आदि छंदों का प्रयोग भी उनके काव्य में देखने को मिलता है।

जहाँ तक भाव-प्रवणता की बात है तो केशव के काव्य में मार्मिक स्थलों की कोई कमी नहीं है। राम-चंद्रिका के चित्रकूट में रामचंद्र अपनी माताओं से पिता का कुशल क्षेम पूछते हैं उस समय ऐसा दृश्य उपस्थित होता है कि हृदय को छू लेता है —

"तब पूछियो रघुराई, सुख है पिता तन माई।
तब पुत्र को मुख जोई, क्रम तें उठी तब रोई॥"

इस पद में शोक की कितनी गंभीरता है शायद पाठक समझ नहीं पायेंगे। पर मौन रहकर भी सब कुछ कह देना यह केशव के काव्य-कला की ही बात है। रामचंद्रिका में ऐसे कई भाव-स्थल आए हैं जहाँ भावों की अर्थपूर्ण अभिव्यंजना की गयी है। इस प्रकार हम देखते हैं कि केशव की काव्य-कला उच्च कोटि की थी।

B. A. Part-I, Hindi (Hons)
"Keshav ki Kavya Kala"